**हमें अकेले भी जीना आता है**

 शाम रहती है सहमी सहमी सी और शमा बांध जाता है

हम भले ही अकेले हो यहाँ, फिर भी वक़्त निकल जाता है

काम करते है अपने सुख से, कोई ना हमें सताता है

अब आदत सी हो गयी है अकेले रहने की, इसिलए समाई बीत जाता है

जरूरत तो बहोत लोगो की है हमें, ये मन हमें बताता है

लेकिन क्या करें मजबूरी है हमारी, वरना अकेले कौन जीना चाहता है

फ़रियाद करते है उस परवरदिगार से, की लौटा ले चल हमें

लेकिन इम्तेहान की घडी है तुम्हारी, ये कहके वो मायूस कर जाता है

फर्क पड़ता नहीं हमें अकेले होने से, मन हमें बतलाता है

इसीलिए तो कहते है हम, हमें अकेले भी जीना आता है

**किशोर पाठक**